आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक : 3 बीकानेर, नवम्बर, 2015 मूल्य : ₹ 2.00

कुलपति की कलम से.....

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

माननीय मुख्यमंत्री द्वारा पशुधन रक्षा की अपील : आओ हम सब अमल करें।

पशुधन घर परिवार और हमारी अर्थ व्यवस्था का प्रमुख जरिया है। इसकी पूरी देख भाल और पोषण पर ध्यान देने से यह हमेशा उत्पादक बना रहता है। कई बार प्रजनन संबंधी विकार और अन्य कारणों से इनकी उत्पादकता प्रभावित हो जाती है और हम इन्हें नकारा समझकर उपेक्षा करने लगते हैं। ऐसे पशुओं को खुले में छोड दिया जाता है और वे प्लास्टिक व अन्य अखाद्य पदार्थों को खाकर बीमार होकर मौत के मुँह में धकेल दिए जाते हैं। कई बार ब्याह– शादियों या होटलों की जूंठन भी ऐसे पशुओं को परोस दी जाती है, जो गलत है। नकारा समझे जाने वाले पशुओं का उचित उपचार करके और चिकित्सा विशेषज्ञ की सेवाएं लेकर पुनः प्रजनन योग्य बनाने की संभावनाएं रहती हैं। कई बार उन्नत पशु पोषण और उचित प्रबंधन करने से भी इन्हें दुधारू बनाया जा सकता है। पशुओं की रक्षा करना भी हमारा कर्तव्य है। अभी हाल ही में राज्य की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने नेहड़ी (देशनोक) बीकानेर में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी में गायों द्वारा खाए गए प्लास्टिक व अन्य अखाद्य पदार्थों को निकालने की सर्जिकल तकनीक को देखकर चिंता जताई है। इस अवसर पर आयोजित जनसभा में माननीय मुख्यमंत्री ने लोगों का आह्वान किया कि वे ऐसी स्थिति को टालकर पशुधन की रक्षा करें, क्योंकि यह पीड़ादायक है। प्लास्टिक के उपयोग को भी राज्य सरकार द्वारा प्रतिबंधित किया हुआ है। हमें माननीय मुख्यमंत्री द्वारा व्यक्त पीड़ा और अपील के मद्देनजर पशुधन की सुरक्षा के लिए सजग रहकर कार्य करना होगा। मुझे आशा है कि आप सभी इस ओर संकल्पबद्ध होकर आगे बढ़ेंगे।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे द्वारा देशनोक में विश्वविद्यालय के न्यूजलैटर का विमोचन

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

मुख्य समाचार

मुख्यमंत्री द्वारा विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी का अवलोकन

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण द्वारा नेहड़ी (देशनोक) में श्री करणी माता स्मारक के शिलान्यास समारोह में 28 अक्टूबर, 2015 को वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने प्रदर्शनी स्टॉल में मुख्यमंत्री श्रीमती राजे का अभिनंदन किया जहां उन्होंने वेटरनरी विश्वविद्यालय के त्रैमासिक प्रकाशन राजुवास न्यूजलेटर का विमोचन किया। मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए देशी गौवंश के संवर्द्धन और विकास के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे कार्यों की पूरी जानकारी कुलपति प्रो. गहलोत से प्राप्त कर प्रसन्नता जताई। उन्होंने प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय के पशु शल्यचिकित्सकों द्वारा गाय द्वारा खाए गए प्लास्टिक व अन्य अखाद्य पदार्थों को निकालने की सर्जिकल तकनीक को देखकर गौवंश के प्रति चिन्ता व्यक्त की और उनकी रक्षा के लिए किए जा रहे उपायों की जानकारी ली। कुलपति प्रो. गहलोत ने मुख्यमंत्री को राज्य की छह गौवंश नस्लों के संवर्द्धन और संरक्षण उपायों की जानकारी दी। इस प्रदर्शनी में गौवंश के विभिन्न आकर्षक मॉडल, आहार और हरे चारे के उत्पादन और चारे के संरक्षण की साईलेज पद्धतियों को सैकड़ों लोगों ने देखकर जानकारी प्राप्त की। प्रदर्शनी में पशुओं और खासतौर पर गौवंश से सम्बद्ध मुद्रित साहित्य का वितरण किया गया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा राठी गौवंश का सर्वेक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा लूणकरणसर तहसील के पांच गांवों में देशी गौवंश राठी का सर्वे करके जैव संरक्षण कार्य शुरू किये जायेंगे। कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर देशी गौवंश के संरक्षण और संवर्द्धन कार्यों के साथ ही गांवों में भी इसके संरक्षण और विकास के कार्य शुरू किये गए हैं। पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. सुभाष गोस्वामी के नेतृत्व में दो वैज्ञानिकों के दल ने मंगलवार को गांव शेरपुरा का दौरा कर वहां 10 हजार राठी गौवंश की उपस्थिति पाई है। सर्वे में गांव सुंई, खोडाला, खोड़ा और शेखसर में 50 से 100 राठी गायों को रखने वाले पशुपालकों का सर्वे करके केन्द्र द्वारा पंजीकृत किया जा रहा है। सर्वे में डॉ. देवेन्द्र सिंह मनोहर और डॉ. रणजीत सिंह कार्य कर रहे हैं।

नोरंगदेसर व डाईया में उन्नत पशुपोषण पर प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र द्वारा नोरंगदेसर एवं डाईया गांव में उन्नत पशुपोषण पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर 19 व 30 अक्टूबर, 2015 को आयोजित किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि पशुओं से अधिक उत्पादन प्राप्त करने में सन्तुलित पशु आहार का महत्वपूर्ण योगदान है अतः पशुपालकों को पौष्टिक और सरलता से सुलभ होने वाले पशु आहार के बारे में जानकारी होना बहुत जरूरी है। इसी उद्देश्य से केन्द्र द्वारा पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जा रहे है। शिविर में पशुपालकों को संतुलित और पौष्टिक आहार की आवश्यकता, वर्ष पर्यन्त हरा चारा उत्पादन, हरे चारे को लम्बे समय तक सुरक्षित रखे जाने की विधियों और पौष्टिक हरा चारा "अजोला" के उत्पादन की जानकारी विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की गई। इस शिविर में डॉ. दिनेश जैन, दिनेश आचार्य, महेन्द्र सिंह मनोहर, डॉ. पी.डी. स्वामी एवं डॉ. मोहनलाल यादव ने अपनी सेवाएं दी। इन शिविरों में 94 पशुपालकों ने भाग लिया।

बरजांगसर गांव में जैव विविधता पर प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा ग्राम बरजांगसर (श्रीडूँगरगढ़) में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. सुभाष गोस्वामी ने बताया कि ग्राम पंचायत भवन में आयोजित इस शिविर में 25 कृषकों और पशुपालकों ने भाग लिया। डॉ. मोहनलाल चौधरी, डॉ. अरूण झीरवाल व डॉ. देवेन्द्र सिंह मनोहर ने विद्यालय के छात्र–छात्राओं को जैव विविधता के संरक्षण के लिए प्रोत्साहित किया।

कोटा जिले में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा दिनांक 7, 14, 17 एवं 26 अक्टूबर, 2015 को ग्राम देवली माछियान, रोटेडा, रामराजपुरा एवं घघटाना में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 94 पशुपालकों ने भाग लिया।

नागौर में भेड़ पालन प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 10 अक्टूबर को गांव धोलया, 16 अक्टूबर को वीयूटीआरसी केन्द्र पर तथा 27 एवं 28 अक्टूबर को गांव इन्दपुरा एवं दुजार में पशुपालकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 134 पशुपालकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ में महिला पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ एवं आत्मा योजना के संयुक्त तत्वावधान में वीयूटीआरसी केन्द्र पर 14 अक्टूबर को महिला प्रशिक्षणाथियों को उन्नत एवं वैज्ञानिक विधि से पशुपालन अपनाने के लिए प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में श्रीगंगानगर क्षेत्र की 29 महिला पशुपालकों ने भाग लिया।

किसानों द्वारा जैविक खेती एवं पशुपालन का संकल्प

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ में एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केन्द्र, श्रीगंगानगर द्वारा आयोजित दो दिवसीय अभिरूचि प्रशिक्षण कार्यक्रम 9–10 अक्टूबर को आयोजित किया गया ।पशुपालन की नवीनतम तकनीकों, डेयरी और बकरीपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में 64 पशुपालक व किसानों ने भाग लिया।

सिरोही में महिला पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 12 एवं 14 अक्टूबर को ग्राम अणगौर एवं वीराविलपुर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इन शिविरों में 56 पशुपालकों ने भाग लिया।

देवरी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 15 अक्टूबर को ग्राम देवरी में 22 पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

भरतपर में महिला पशुपालक हुई प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 9, 14 एवं 28 अक्टूबर को ग्राम सजोला, कुचावटी एवं ग्राम खांगरी(नदबई) में एक दिवसीय पशुपालन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 96 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर एवं आत्मा योजना के संयुक्त तत्वाधान में 15–16 अक्टूबर को एवं 26–27 अक्टूबर को दो दिवसीय कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 102 पशुपालकों ने भाग लिया।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–नवम्बर, 2015

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	पाली, सिरोही
खुरपका–मुँहपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेचड़	धौलपुर, सवाईमाधोपुर, जैसलमेर
गलघोंटू	भैंस, गाय	जयपुर, भीलवाड़ा
फड़किया	बकरी, भेड़	टोंक
भेड़ो में एन्जूरिक गर्भपात	भेड़	बीकानेर
चेचक/छोटी माता	ऊंट	बीकानेर
बबेसियोसिस	गाय, घोड़ा	बीकानेर, धौलपुर
एम्फिस्टोमोसिस	गाय, भैंस,	कोटा, धौलपुर, उदयपुर, भरतपुर
फेसियोलियोसिस	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूँगरपुर, हनुमानगढ़
सी.सी.पी.पी. (एक प्रकार का न्यूमोनिया)	बकरी	धौलपुर
सालमोनेलोसिस	ऊँट	बीकानेर
पाश्चुरेल्ला इन्फेक्शन	गाय	सीकर

मुर्गियों में इस समय गोल व फीताकृमि, कोलिबेसीलोसिस, कोरयाजा, कोकसीडीओसिस रोगों के होने की सम्भावना है मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें । सम्पर्क करें– प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर । फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

।। कोई व्यक्ति अपने कार्यो से महान होता है, अपने जन्म से नहीं ।।

अपने देशी गौवंश को पहचानें

प्रदेश का गौरव- राठी गौवंश

राठी गौवंश राजस्थान की एक महत्वपूर्ण प्रतिष्ठित विरासत नस्ल है जिसका उद्‌भव पीढी दर पीढ़ी रेगिस्तान की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों को सहते हुए हुआ है। इस नस्ल में राजस्थान के सूखे क्षेत्र की परिस्थितियों में अच्छा उत्पादन देने की जन्म जात क्षमता है। इस नस्ल को राठ के नाम से भी पुकारते है। इस नस्ल का मुख्य प्रजनन क्षेत्र राजस्थान के बीकानेर, जैसलमेर तथा गंगानगर जिले हैं। बीकानेर की लूनकरणसर तहसील राठ क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है। राजस्थान के अलवर जिले में भी बड़ी संख्या में इस नस्ल के पशु पाये जाते हैं। राठी नस्ल का विकास साहीवाल, लाल सिंधी, थारपारकर तथा धन्नी नस्ल से हुआ है। मुख्यतः दूध के लिए पाली जाने वाली इस नस्ल के पशुओं का रंग सामान्यतया सफेद धब्बे युक्त भूरा रंग होता है। किंतु पूर्ण भूरा अथवा सफेद धब्बेदार काला रंग भी देखने को मिलता है। इसके सींग छोटे से मध्यम आकार के तथा बाहर के अंदर की ओर घूमे हुए होते हैं। इसका सिर आँखों के बीच चौड़ा तथा ताबूत के आकार का होता है। मादा पशुओं का वजन लगभग 295 कि.ग्रा. तथा ऊँचाई लगभग 115 से. मी. होती है। गायों का औसत दुग्ध उत्पादन 1560 कि.ग्रा. होता है। प्रथम ब्यांत के समय औसत आयु 46.4 माह तथा दो ब्यांत के बीच अंतराल 17 माह होता है। दूध में वसा की मात्रा 4 प्रतिशत होती है। राठी देशी गौवंश के उन्नयन एवं संवर्द्धन का कार्य राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के बीकानेर और नोहर (हनुमानगढ़) स्थित पशुधन अनुसंधान केंन्दों पर किया जा रहा है। बीकानेर केन्द्र पर राठी नस्ल के 448 और नोहर केन्द्र पर 287 गाय, सांड और बछड़े–बछड़ियों का पालन किया जा रहा है। राठी गायों में प्रथम ब्यांत की अवधि वर्तमान परिवेश में 1150 दिन तक लाई गई है। राठी की चुनिंदा श्रेष्ठ गायों में राष्ट्रीय पशु आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो के 1560 लीटर प्रति दुग्धकाल के मुकाबले में 4400 लीटर प्रति दुग्धकाल प्राप्त किया गया है। राठी गाय में दुग्ध उत्पादन प्रति दिन 25.1 (उच्चतम) लीटर तक प्राप्त किया गया है। केन्द्र द्वारा अब तक 190 श्रेष्ठ नस्ल के बछड़े व सांडों का वितरण गौशालाओं और पंचायत संस्थाओं को नस्ल सुधार के लिए किया गया है। राठी गाय का पालन संकर नस्ल की गाय के पालन की तुलना में अधिक फायदेमंद और सरल है।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन (जैसलमेर)

जैसलमेर के चांदन गांव में स्थित यह पशुधन अनुसंधान केन्द्र 5 दिसम्बर 1984 से अस्तित्व में आया था। इससे पूर्व इसे बुलमदर फार्म नाम से जाना जाता था। इसका उद्धेश्य अधिक से अधिक उन्नत नस्ल के सांड तैयार करके गौशालाओं, पंचायतों, सरकारी व गैरसरकारी संस्थाओं, प्रगतिशील पशुपालकों व किसानों को देकर शुद्ध थारपारकर नस्ल तैयार कर उसका विकास करना था। विश्वविद्यालय में आने से पूर्व यह फार्म जिला ग्रामीण विकास अभिकरण से हस्तान्तरित हुआ। इस केन्द्र के पास वर्तमान में लगभग 15000 बीघा जमीन है तथा 4 नलकूप संचालित करके वर्तमान में इस केन्द्र से लगभग 5000 हजार क्विंटल हरा चारा व लगभग 2000 क्विंटल सूखे चारे का उत्पादन किया जा रहा है। वर्तमान में इस केन्द्र पर 445 थारपारकर गौवंश व इस केन्द्र के सहयोग से लगभग 130 पशु बीकानेर में कुल 575 थारपारकर नस्ल के शुद्ध पशु पोषित किये जा रहे हैं। सन् 1985 के बाद से आज तक इस केन्द्र द्वारा लगभग 1700 उन्नतशील थारपारकर नस्ल के पशुओं को (31 मार्च 2015 तक) विभिन्न गौशालाओं व संस्थाओं को वितरित किया जा चुका है। इस केन्द्र का वर्तमान में मूल उद्धेश्य देशी नस्लों के संरक्षण व विकास में थारपारकर नस्ल की गायों का संरक्षण व संवर्द्धन करने के साथ–साथ पूरे देश में इस नस्ल की बढ़ोत्तरी करके विकसित करना है। इस केन्द्र ने पूर्व भारत के कुछ प्रदेशों व जम्मू कश्मीर को छोड़कर लगभग सभी प्रदेशों में इस नस्ल के पशु भिजवाये हैं। वर्तमान में इस केन्द्र द्वारा चारा, दाना उत्पादन व देशी नस्ल के पशुओं की संख्या में वृद्धि करने के साथ–साथ लगभग 60 लाख रू. की आय भी प्राप्त हो रही है। वर्तमान में इस केन्द्र में पोषित थारपारकर गाय से 1 दिन में अधिकतम 25 लीटर दूध पैदा किया जा चुका है तथा इसको बढ़ाकर 30 लीटर दूध लेने की योजना है। इसके साथ–साथ इस नस्ल की गुणवता में सुधार करके इनके सूखा काल, दो ब्यांतो के बीच में अन्तर, प्रथम ब्यात की उम्र व मृत्युदर को कम करने जैसे कार्यों पर अनुसंधान किया जा रहा है। इसके साथ–साथ पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने जैसे शोध कार्य भी किये जा रहे हैं। थारपारकर नस्ल की प्रमुख विशेषता अधिकतम तापमान सहकर भी अपनी उत्पादन क्षमता को प्रभावित न होने देना है। इसका प्रमुख रंग सफेद व हल्का नीला होता है। इस नस्ल पर किसी तरह के धब्बे या अन्य रंग नहीं होता है तथा इसके सींग छोटे–छोटे, माथा पूर्ण विकसित व चौड़ा एवं गलकम्बल पूर्ण विकसित व झूलती हुई होती है।

वनों और वन्यजीवों का संरक्षण जरूरी है

वनों और वन्य जीवों के संरक्षण से हमारा अभिप्राय वनों और वन्य जीवों के संरक्षण और रक्षा के लिए किए गए उपायों से है। वन्य जीवों के नुकसान का एक मुख्य कारण वनों की अंधाधुंध कटाई है। एक समय ऐसा था कि जंगलों में मानवीय हस्तक्षेप कम से कम होता था और जंगली जानवरों की संख्या काफी अधिक थी और उनकी सुरक्षा या संरक्षण की कोई समस्या या आवश्यकता नहीं थी, लेकिन, आदमी ने अपने लालच के लिए कृषि में बढोतरी, औद्योगिक विकास और अन्य विकासात्मक गतिविधियों के विस्तार करने के लिए जंगलों की अंधाधुंध कटाई की है। जिसके कारण जंगलों और जंगली पशुओं की संख्या धीरे–धीरे कम होती जा रही है। 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में भूतल के एक चौथाई भाग पर वनों का विस्तार था किन्तु उनका ह्रास होते होते अब केवल 15 प्रतिशत भाग पर ही वन शेष हैं इसका कारण वनों का विनाश होना है। मनुष्य ने वनों का विनाश बहुत अविवेकपूर्वक किया है। फलस्वरूप प्राकृतिक सम्पति का यह स्त्रोत बहुत हीन हो गया है। मनुष्य द्वारा वनों के दुरूपयोग के अतिरिक्त वनों के ह्रास में कुछ अन्य कारक भी योगदायी हैं। उनमें प्रमुख है दावाग्नि, प्रवासी कृषि कीड़े–मकोड़े, वनों में बीमारियां और तूफान व अन्य वन्यप्राणी आदि। वनों के महत्व को जानकर हाल ही में विभिन्न देशों ने वनों को काटने और उन्हें बर्बाद होने से बचाने के लिए कुछ वैज्ञानिक नीतियां अपनाई हैं। इन नीतियों के द्वारा वनों का संरक्षण करने के साथ उनका बुद्धिमानी से प्रयोग करते हुए उनसे अधिकतम लाभ उठाना है। वनों के संरक्षण के प्रति सबसे महत्वपूर्ण कदम वृक्षारोपण है। जहां वन कट गए हैं वहां वन लगाना, अपरिपक्व वृक्षों के काटने पर प्रतिबन्ध लगाना और लोगो में वनों के प्रति जागरूकता से वनों का संरक्षण संभव है। भारत में चिपको आन्दोलन इसी जागरूकता का एक उदाहरण है। वनों को आग से बचाना भी बहुत आवश्यक है। ये आग कभी कभी प्राकृतिक कारणों से लगती है परन्तु अधिकतर ये मनुष्य की लापरवाही के कारण लगती है। अतः ऐसे उपाय किये जाने चाहिए जिससे लोग वनों में असावधानी न बरतें। वन्य प्राणियों का हमारे जीवन में विविधता बनाये रखने में बहुत योगदान है। पारिस्थितिकी संतुलन के लिए वन्य प्राणी भोजन श्रृंखला को बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वनों के ह्रास के साथ–साथ वन्य प्राणी भी कम होते जा रहे हैं। उनकी प्रजातियां लुप्त न हो जाये इसलिए इनका संरक्षण अनिवार्य है। इसके लिए राष्ट्रीय उद्यान तथा वन्य–जीव अभयारण्य की स्थापना आवश्यक है। अनेक देशो ने कानून बना कर कुछ पशु–पक्षियों की हत्या को अपराध करार दे दिया है। भारत में शेर, चीते, संबद्ध कानूनों को कठोरता से पालन करने से ही स्थिति में परिवर्तन लाया जा सकता है। जानवरों की प्रजातियों के विकास में और उनके प्रजनन में वन और वन्य जीवों की मदद

WILDLIFE PROTECTED AREAS LOCATION IN RAJASTHAN STATE

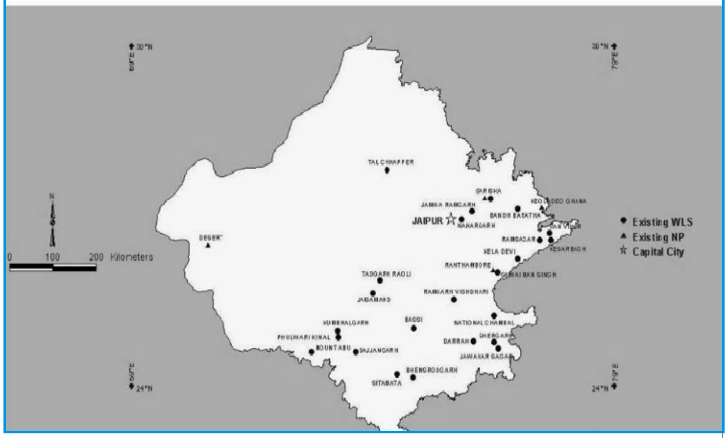

के संरक्षण के लिए वर्ष 1972 में भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम लागू किया गया था। यह कानून के रूप में विशिष्ट निवास की रक्षा के लिए बनाया है। संरक्षित वन्यजीव प्रजातियों की एक सूची प्रकाशित की गई है और इन वन्य जीवों का शिकार करना कानूनी रूप से अपराध है। कई राज्यों में लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा के लिए राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य बनाए गए हैं। राजस्थान राज्य भारत गणराज्य का क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा राज्य है। जिसका क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग कि.मी है। इस राज्य में पशुओं की लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा के लिए राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्यों का निर्माण किया गया है। राजस्थान में चार राष्ट्रीय उद्यान हैं जो कि 3856.53 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैले हैं जो कुल क्षेत्रफल का 1.13 प्रतिशत है। यहां 24 वन्यजीव अभयारण्य है जो कि 5712.83 वर्ग कि.मी के क्षेत्र में फैले हैं जो कुल क्षेत्रफल का 1.67 प्रतिशत है। पशुओं का हमारे जीवन में महत्व और उनकी लुप्त होती प्रजातियों को देखते हुए राजस्थान सरकार द्वारा 5 नए राष्ट्रीय उद्यान और 12 वन्यजीव अभयारण्यों का निर्माण किया जा रहा है राजस्थान पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा पशुओं व वन्यजीवों की सुरक्षा, पशुओं की बीमारियों व उनकी रोकथाम के लिए समय समय पर जागरूकता अभियान और सेमिनारों का आयोजन किया जाता है एवं पशुपालन विभाग में कार्यरत फील्ड ऑफिसर व अन्य कर्मियों को पशुओं के रोगों के प्रकोप से बचाने के नए तरीकों का प्रशिक्षण दिया जाता है। परन्तु इन सब के बावजूद देखने को मिलता है कि कुछ लोग अपने शोक पूरे करने के लिए पशुओं का शिकार करते हैं वहीं कुछ लोग उनके मांस, हड्डियों, फर, दांत, बाल, त्वचा के लिए वन्य जीवों की हत्याओं में शामिल होते हैं। इन सब कारणों के चलते वन्यजीवों का संरक्षण एक जरूरत बन गया है।

–रवि कुमार, डॉ. नजीर मोहम्मद, डॉ. अभिमन्यु सिहाग एवं प्रो.(डॉ.) ए.के.कटारिया, राजुवास, बीकानेर (9460073909)

कीटोसिस- अधिक दुग्ध उत्पादन में मुख्य बाधा

कीटोसिस एक किस्म की ऊर्जा की चय–अपचय की खराबी है। जब पशुओं के शरीर में ऊर्जा स्त्रोत के रूप में कीटोन के अवशोषण और उत्पादन पशुओं के उपयोग से ज्यादा होने लगता है, तो इस बीमारी की अवस्था बन जाती है। खून में बहने वाले अतिरिक्त कीटोन पिंड फिर पेशाब, दूध और पशु के सांस में चले जाते हैं।

रोग के कारक व वर्गीकरण :–

आहार सम्बन्धी किटोसिस:– अस्वादिष्ट, खराब गुणवता तथा अत्यधिक मात्रा में साईलेज खिलाना। साईलेज में ब्यूटाईरेट (अत्यधिक कीटोसिस कारक वसीय अम्ल) की मात्रा अत्यधिक पायी जाती हैं जो कि कीटोजेनिक सामग्री हैं।

भूखे रहने से होने वाला कीटोसिस :– चारे की गुणवता ठीक ना होना अर्थात् चारे में प्रोटीन व प्रोपीयोनेट की मात्रा कम होना, अकाल तथा बाढ़ की स्थिति में चारे की उपलब्धता नहीं होना।

प्रारम्भिक कीटोसिस/प्रधान कीटोसिस/अधिक दुग्ध स्त्रावण से होने वाला कीटोसिस :– अधिक दुग्ध उत्पादन करने वाले पशुओं में नियमित रूप से दुग्ध में लेक्टोज शर्करा स्त्रावित होती है, जिसकी क्षतिपूर्ति के लिए आहार में प्रोपीयोनेट और अमीनो अम्ल की आवश्यकता होती है। जब दुग्ध स्त्रावण शीर्ष पर होता है, तो आहार में प्रोपीयोनेट और अमीनों अम्ल की कमी से पशु के शरीर में ग्लुकोनीयोजेनेसिस की प्रवृति बढ़ जाती है, फलस्वरूप कीटोन बॉडिज शरीर में एकत्रित हो जाती है।

द्वितीय कीटोसिस/अप्रधान कीटोसिस:– थनैला रोग, रेटीक्यूलाईटिस, मेटेराईटिस, ऐबोमस्टाईटिस एवं ऐबोमेसम रोगों के स्थल अंतरण में कीटोसिस देखी जा सकती है।

पोषक तत्वों की कमी से होने वाला कीटोसिस :– कोबाल्ट एंव फोस्फोरस की कमी भी कीटोसिस का कारण बन सकती है।

नैदानिक लक्षण :– पशुओं में कीटोसिस के लक्षण दो रूपो में प्रदर्शित होते है।

क्षयकारी रूप :–

- दुग्ध उत्पादन में आकस्मिक और उतरोत्तर कमी होना।
- आकस्मिक तौर पर वजन कम होना।
- क्षुधा का नाश जिसमें धीरे–धीरे भूख नहीं लगती। पशु के द्वारा दाने वाले चारे में कोई रूचि न रखना और मोटे चारे में रूचि रखना।
- पशु का पतला दिखाई देना एवं कुबड़े की तरह खड़े रहना।
- पशु में उदासी व सुस्ती का रहना एवं आंखे पथराई होना।
- कब्ज, ठोस या सूखा गोबर।
- सांस, पेशाब व दुग्ध में कीटोन की गंध का पाया जाना।

कमजोरी (उत्तेजना) वाला रूप :–

- निरउद्धेश्य एवं गोल चक्कर में घूमना, अंधापन लगना एवं निष्क्रियपन।
- अत्यधिक लार स्त्रावण।
- पैरों को एक दूसरे में घुसा कर तथा किसी वस्तु पर टेका लगाकर खड़े रहना।
- स्वंय के शरीर को और निर्जीव वस्तुओं को चाटने की क्रिया बढ़ जाना।
- आस पास की निर्जीव वस्तुओं को चबाना, दांतों को किटकिटाना।
- उन्मत आक्रमक और सिर मारने के लक्षण।

रोग निदान :–रोग के इतिहास, क्लीनिकल लक्षण और पेशाब एंव दुग्ध में कीटोन्स के मिलने पर रोग का निदान तय किया जाना चाहिए।

- पेशाब में कीटोन की सान्द्रता खून में कीटोन की सान्द्रता की तुलना में चार गुना होती है । दूध में कीटोन की सान्द्रता रक्त की (सान्द्रता) होती है। कीटोन्स आम तौर पर पेशाब में या शुरू के दुग्ध काल वाले पशुओं में ज्यादा दुग्ध देने पर पाया जाता है, इसलिए दुग्ध में कीटोन्स का पाया जाना रोग निदान के लिए महत्वपूर्ण बिन्दु है।
- फील्ड टेस्ट :– रॉस टेस्ट, डेन्को पाउडर टेस्ट, रोथराज टेस्ट एंव यूरिन रीएजेन्ट स्ट्रिप टेस्ट।

उपचार :–

ग्लूकोज प्रतिस्थापन :–

- उपचार का प्रथम उददेश्य शरीर में भी ग्लूकोज कमी की पूर्ति करना ।
- सभी मामलों में अन्तःशिराओं में ग्लूकोज (10–50 प्रतिशत) का मिश्रण (0.5 ग्राम/किलोग्राम शरीर भार) दिया जाना चाहिए ।
- पशु को पिलाने वाले ग्लूकोजेनिक घटक जैसे की प्रोपाईलिन ग्लाईकोल (125ml) या ग्लिसरीन (250ml) प्रतिदिन दिये जायें ।
- ग्लूकोज/फ्क्टोज या ग्लूकोज/सॉरबिटोल का संयुक्त मिश्रण दें। ये शर्कराएं धीरे–धीरे यकृत में ग्लूकोज में बदल जाती है, जिससे अधिक दूरगामी प्रभाव बना रहता है।

हार्मोन थैरेपी :–

- कोर्टीकोस्टीरोईड का उपयोग – यह ग्लुकोनियोजेनेसिस के उत्तेजन में अत्यधिक मदद करती है।

अन्य सहायक उपचार :–

- 10 सप्ताह तक नियासिन 6 ग्राम प्रतिदिन खिलाएं।
- कोलीन 25–50 ग्राम प्रतिदिन खिलाएं।
- विटामिन बी–12 का इंजेक्शन अन्तःशिराओं में लगाना चाहिए।

अन्य बचाव के उपाय :–

- यदि चारे के साथ गुड़ न खिलाया गया हो तो मोलासेज (300–400 ग्राम) की थोड़ी मात्रा खिलाएं ।
- फोस्फेट व कोबाल्ट मिला हुआ खनिज लवण मिश्रण प्रतिदिन खिलाएं।
- अधिक ब्यूटाईरिक अम्ल वाला चारा न खिलायें।

–डा. सुनील कुमार तमोली, डा. राजेश सिंगाठिया
(मो.9460886076), वीयूटीआरसी, चूरू

सर्दियों में मुर्गियों का प्रबंधन कैसे करें

देश के उत्तरी इलाकों में हिमपात होने के कारण इन दिनों उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में सर्दी का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है जिससे नवम्बर माह में सामान्य से ज्यादा सर्दी की सम्भावना बन रही है। मुर्गियां वातावरण के तापमान के प्रति काफी संवेदनशील होती है जिसकी वजह से अत्यधिक गर्मी अथवा अत्यधिक सर्दी में मांस व अंडे उत्पादन में काफी कमी हो जाती है। अचानक मौसम बदलने से सर्दियों में कुछ जीवाणु अथवा विषाणुजनित रोगों से मुर्गियों के प्रभावित होने की सम्भावना भी बढ़ जाती है। इन रोगों में न्यूमोनिया और ब्रोंकाईटिस मुख्य रूप से प्रभावित करती है। इन दोनों ही रोगों में श्वास संबंधी लक्षण दिखाई देते हैं। यदि प्रारम्भ में ही इनका प्रबंधन न किया जाये तो मुर्गियों में मृत्युदर बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त रानीखेत रोग की भी काफी संभावना रहती है। चूजों में वयस्क मुर्गियों की तुलना में प्रभाव ज्यादा देखा जाता है। बहुत तेज सर्दी की अवस्था में मुर्गियां बिना कोई लक्षण दिखाये मर सकती है, यदि मुर्गियां घर के एक कोने में इकट्ठा हो रही हो तो समझना चाहिये कि वो सर्दी से प्रभावित हो रही है। पशुपालक भाईयों को चाहिये की मुर्गीघर में ठंडी हवा से बचाव के लिए खिडकियों में पल्ली इत्यादि का प्रयोग करें लेकिन साथ ही यह ध्यान रखें कि मुर्गी घर के अन्दर घुटन न हो और स्वच्छ हवा का आवागमन होता रहे। तेज सर्दी में चूजों का विशेष ध्यान रखें और मुर्गीघर में बिजली के बल्ब व हीटर से मुर्गीघर का तापमान 20 से 25 डिग्री सेंटीग्रेड के मध्य रखें। बल्ब और हीटर प्रयोग करते समय मुर्गीपालक यह अवश्य ध्यान रखें कि मुर्गी व चूजों को पीने के पानी की कमी न हो। इसके अतिरिक्त आहार के साथ पर्याप्त लवण व विटामिन भी मुर्गियों को दिये जाने चाहिये। असामान्य मृत्युदर होने पर मुर्गीपालकों को तुरंत निकटतम पशु चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिये। पशुपालक भाईयों को मुर्गियों के टीकाकरण के बारे में भी सावचेत रहना चाहिए और समयानुसार टीकाकरण करवाना चाहियें जिसकी विस्तृत जानकारी निकटतम पशु चिकित्सालय से ली जा सकती है।

– प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

सफलता की कहानी

सफल बकरी पालन पर फूस सिंह हुए सम्मानित

बीकानेर जिले के डाइया गांव के रहने वाले प्रगतिशील व सफल बकरी पालक फूससिंह (उम्र 55 साल) करीब 30 वर्षो से बकरी, भेड़ पालन व कृषि का कार्य कर रहे हैं। घर की आवश्यकतानुसार 10–15 बकरी रखते हुए अपनी 50 बीघा असिंचित (बीरानी) भूमि पर कृषि करते थे। कृषि वर्षा पर ही निर्भर थी जिससे अधिक पैदावार नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर थी, लेकिन 6 वर्ष पहले उन्होंने वेटरनरी विश्वविद्यालय की बकरी परियोजना से प्रेरित होकर बकरी पालन को ही अपना प्रमुख व्यवसाय बनाने की ठान ली। शुरू में उन्होंने 20 मारवाड़ी नस्ल की बकरी रखी और बकरी परियोजना में पंजीकृत सदस्य बने और समय समय पर परियोजनाओं से जानकारी लेकर आज एक सफल बकरी पालक हैं और गांव के पशुपालकों के लिये प्रेरणा स्त्रोत हैं। आज उनके पास लगभग 105 मारवाड़ी नस्ल की बकरियां हैं और तीन बकरी परियोजना के तहत मारवाड़ी नस्ल के बकरे। उनकी 105 बकरियों में से 23 प्रतिशत वो बकरियां हैं जो दो या तीन बच्चे एक साथ देती हैं। आज उनकी 50 बीघा जमीन बकरी पालन के लिए काम आ रही हैं, वहां वो कोई बीजाई नहीं करते व उसे बकरियां चराने के उपयोग में लेते हैं। बकरियों का पंसदीदा भोजन खेजड़ी के पत्ते (पनडी) व बेर का पेड़ (बोरटी) हैं, इसलिए उन्होंने लगभग 60 खेजड़ी व 100 –155 बेर के पेड़ लगा रखे हैं। इन पौधों को कम पानी की आवश्यकता होती है और ये आसानी से लगाये जा सकते हैं। फूससिंह साल में एक बार उनकी कटिंग करते हैं (छांगते हैं) जिससे उपलब्ध बकरियों को साल भर की खाद्य सामग्री प्राप्त होती हैं। उन्होंने बकरियों को गर्मी व सर्दी से बचाने के लिये शेड़ बना रखे हैं, पेयजल के लिये खाली बना रखी हैं। वो समय समय पर कृमिनाशी दवा व टीकाकरण करवाते रहते हैं जिससे बकरियां स्वस्थ रहती हैं। साल में एक बार लगभग 80 से 90 तक बकरियां विक्रय करते हैं व दूध बेचकर लगभग 3 से 4 लाख रूपये कमाते हैं। फूससिंह ने बकरी के बालों को कातकर चारपाईयां भी बना रखी हैं। आज उनका परिवार सम्पन्न व खुशहाल है। 10 सितम्बर 2015 को कृषि नवोन्मेश दिवस पर फूससिंह को उनकी सफलता के लिए केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, मथुरा द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है। **(सम्पर्क–फूससिंह मो. 8646016501)**

जल ही जीवन है।

निदेशक की कलम से...

स्वदेशी दुधारू पशुधन का पालन अधिक उपयोगी है

प्रिय किसान और पशुपालक भाईयों!

देश में मौजूद स्वदेशी पशुधन में स्थानीय जलवायु और वातावरण के प्रति अनुकूलन की अद्भुत क्षमता पाई जाती है। अतः इनका लालन–पालन भी सरल और फायदेमंद होता है। स्वदेशी नस्लों में तापमान को सहन करने की क्षमता विदेशी तथा संकर पशुओं की अपेक्षा काफी अधिक होती है, तथा प्रतिकूल वातावरणीय परिस्थितियों में भी अपनी उत्पादन क्षमता बनाए रखती है। इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता संकर या विदेशी नस्लों की अपेक्षा ज्यादा होती है। वर्तमान समय में केवल दूध उत्पादन के आधार पर यह माना जा रहा है कि संकर या विदेशी नस्ल की गौवंश अच्छी होती है जबकि वैज्ञानिक रूप से देखा जाए तो संकर नस्ल की गायों में प्रजनन संबंधी समस्याएं भी अधिक पाई गई हैं। देशी नस्ल की गाय के रखरखाव, चारा प्रबंधन व स्वास्थ्य प्रबंधन की लागत कम होने से पशुपालक को अधिक मुनाफा होता है। संकर तथा विदेशी नस्ल की गायों के दूध में वसा की मात्रा भी कम होती है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह पाया गया है कि देशी गौवंश के दूध व दूध से बने उत्पाद से मानव शरीर में कोई रोग नहीं होता। इसका दूध ए–2 श्रेणी का माना जाता है जो स्वास्थ्य के लिए किसी भी प्रकार से हानिकारक नहीं होता है। स्वदेशी पांच दुधारू गो नस्लों जैसे लालसिंधी, साहीवाल, थारपारकर, गिर व राठी के दूध में तो ए–2 जीन की उपस्थिति 100 प्रतिशत तक पाई गई है। स्वदेशी दुधारू पशुधन की उपयोगिता और क्षमता को देखते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के मासिक पत्र ''पशुपालन नए आयाम'' में स्वदेशी पशुओं की विभिन्न किस्मों की विशेषताओं और पहचान को धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जाएगा, ताकि आपको भी स्वदेशी नस्लों की पूरी जानकारी रहे –**प्रो. राजेश कुमार धूड़िया,** प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **नवम्बर 2015** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	डॉ. राहुल सिंह पाल 9460414351 प्रभारी अधिकारी, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन	पशुओं में संतुलित आहार का महत्व	05.11.2015
2	डॉ. महेन्द्र तंवर 9460783040 पशु शल्यचिकित्सा एवं विकिरण विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	बछड़ों में पाये जाने वाले मुख्य रोग एवं उपचार	12.11.2015
3	डॉ. भगतसिंह सैनी 9829276218 पशु शरीर क्रिया विज्ञान विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं में रोगों के उपचार हेतु निदान का महत्व	19.11.2015
4	प्रो. बी.एन. श्रृंगी 9571894341 पशु सूक्ष्म जैविकी विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं में बीमारियों की रोकथाम हेतु टीकाकरण का महत्व	26.11.2015

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : नवम्बर, 2015

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया